विवाह एवं विवाहेतर समस्याएँ, कारण एवं समाधान

वर्तमान समय में कुछ घटनाएँ इतनी असामान्य, इतनी असहनीय होती हैं कि वे सिर्फ समाचार पत्रों की सुर्खियाँ नहीं बनती अपितु वे समाज के आत्मा को झकझोर देती हैं। वर्तमान में ऐसी कितनी घटनाओं ने रिश्तों की गरिमा, विश्वास की नींव और मानवीय मर्यादाओं को गहरे घाव दिये हैं।

हिंदू सनातन में विवाह 16 संस्कारों में से एक है। हिंदू धर्म में सोलह संस्कार जीवन के महत्वपूर्ण चरणों को चिन्हित करते हैं इन संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध और विकसित करना है। व्यक्तित्व निर्माण में हिंदू संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में कई संस्कार विलुप्त होते जा रहे हैं क्योंकि पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव हमारे समाज के संस्कारों पर भी पड़ रहा है। कई लोग संस्कारों को अंधविश्वास की श्रेणी में खड़ा कर देते हैं। इस तरह का ही प्रभाव विवाह संस्कार पर भी पड़ा है और इसका विकृत रूप भी देखने को मिल रहा है।

समाजशास्त्र में विवाह को दो व्यक्तियों के बीच औपचारिक मिलन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें कानूनी, सामाजिक और भावनात्मक संबंध शामिल होते हैं। यह एक ऐसी संस्था है जो पारिवारिक संरचनाओं की नींव के रूप में कार्य करती है और सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। धर्म शास्त्रों के अनुसार विवाह के मुख्य आठ प्रकार होते हैं हालांकि उक्त आठ विवाहों में से ब्रह्म विवाह को हीं मान्यता दी गई है बाकी विवाह को धर्म सम्मत नहीं माना गया है। इनमें देव विवाह को भी प्राचीन काल में मान्यता प्राप्त थी। शेष विवाह को अशुभ माना जाता है। संस्कारों से अंतः शुद्धि होती है और शुद्ध अंतःकरण में ही दांपत्य जीवन सुखमय व्यतीत हो पाता है। सोलह संस्कारों में ब्रह्म विवाह को हीं शामिल किया गया है। दोनों पक्षों की सहमती के समान वर्ग के सुयोग्य वर से कन्या इच्छानुसार विवाह निश्चित कर देना ब्रह्म विवाह कहलाता है। इस विवाह में वैदिक रीति और नियम का पालन किया जाता है, यही उत्तम विवाह है। ब्रह्म विवाह में जब दोनों पक्ष सभी तरह से संतुष्ट हो जाते हैं तभी इस विवाह के लिए शुभ मुहूर्त निकाला जाता है। इसके बाद वैदिक पंडितों के माध्यम से विशेष व्यवस्था जैसे देवी पूजा, वर वरण तिलक, हरिद्रालेप, सप्तपदी, प्रतिज्ञाएँ, शपथ आदि रीतियों को पूर्ण किया जाता है। मनुष्य के ऊपर देव ऋण, ऋषि ऋण एवं पितृ ऋण यह तीन ऋण होते हैं। यज्ञ से देव ऋण स्वाध्याय से ऋषि ऋण तथा उचित रीति से ब्रह्म विवाह करके पितरों के श्राद्ध तर्पण के योग्य धार्मिक एवं सदाचारी संतान उत्पन्न करके पितृ ऋण का परिशोधन होता है। इस प्रकार संतान उत्पन्न करना विवाह का परम उद्देश्य है। यही कारण है कि हिंदू धर्म में ब्रह्म विवाह को एक पवित्र संस्कार के रूप में मान्यता दी गई है। वर्तमान में संस्कार रीति-रिवाज को सिर्फ दिखावे का घृणित चोला पहना दिया गया है। सभी संस्कारों रीति-रिवाजों का, ऋणों का वर्णन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि शनैः-शनैः ये सब विलुप्त होने के कगार में हैं। नैतिकता और सामाजिकता का पतन भी होता जा रहा है।

विवाह एक जटिल रिश्ता है और गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों में सबसे कठिन आश्रम है। इसमें कई तरह की समस्याएँ आ सकती हैं। इनमें से एक महत्वपूर्ण समस्या विवाहेतर संबंध है। विवाहेतर समस्याओं को समझने से पहले विवाहेतर का अर्थ समझना आवश्यक है। यह शब्द विवाह और इतर शब्दों से मिलकर बना है। विवाहेतर संबंध का अर्थ होता है एक विवाहित व्यक्ति अपने पति या पत्नी के अतिरिक्त किसी अन्य के साथ यौन संबंध या भावनात्मक संबंध रखना। यह संबंध विवाह या प्रतिबद्धता की सीमाओं से बाहर होता है। विवाहित संबंध को अक्सर एक विवाहित व्यक्ति के प्रति विश्वासघात के रूप में देखा जाता है। भारत में विवाहेतर संबंध को व्यभिचार माना जाता है जो एक कानूनी अपराध है। इस संबंध का सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। विवाहित संबंध विवाह में विश्वास, संचार और अंतरंगता पर बुरा असर डालता है।

खुशबू बरनवाल सीपी
राँची, झारखंड

विवाहेतर संबंधों से कई समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, कुछ समस्याएँ निम्न इस प्रकार हैं-

विश्वास को तोड़ते हुए विश्वासघात करते हैं।

विवाहेतर संबंध पति-पत्नी के मध्य अवसाद, क्रोध और निराशा की भावना को जन्म देता है।

यह संबंध तलाक जैसी समस्या की संख्या समाज में तीव्र गति से बढ़ा रही हैं।

विवाहेतर संबंध को सामाजिक रूप से अस्वीकार्य माना जाता है। सामाजिक कलंक से बचने के लिए दंपति एक-दूसरे की हत्या करने से भी नहीं कतरा रहे हैं।

इससे सबसे ज्यादा बच्चों पर प्रभाव पड़ता है।

इन समस्याओं का कारण भी वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की कमी है। इसके अतिरिक्त कई निम्न कारण इस प्रकार हैं ः-

पति-पत्नी जब एक-दूसरे से खुलकर और ईमानदारी पूर्वक नहीं बात करते हैं तो यह भी विवाहेतर संबंध को आमंत्रित करता है।

विवाह के कुछ वर्षों बाद पति-पत्नी के कुछ जोड़ों में अंतरंगता के प्रति उदासीनता उत्पन्न हो जाती हैं।

वर्तमान समय में वित्तीय समस्या भी विवाहेतर संबंध को हवा देता है। इसके कई उदाहरण हमारे समाज में चारों ओर है। अतिशीघ्र धन लाभ के लिए भी दोहरे संबंध से जुड़ते हैं। अत्यधिक महत्वाकाँक्षी होना भी इसे बढ़ावा देता है। गृहस्थ जीवन में आर्थिक उतार-चढ़ाव आता है साथ में विषम परिस्थितियों से जूझना पड़ता है। कभी-कभी सही ताल -मेल नहीं बिठाने के कारण भी यह समस्या उत्पन्न होती है।

दो परिवेश के नये युगल दंपति होते हैं। एक साथ जीवन बिताने और सामंजस्य स्थापित करने के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है जो वर्तमान में कमी देखने को मिलती है।

एक-दूसरे पर अकारण शक करना और अविश्वास की भावना रखना।

पहले खाली समय को भरने के लिए कलात्मकता का सहारा लिया जाता था वहीं आज सोशल मीडिया का प्रभाव मन-मस्तिष्क पर हावी रहता है। जिसमें अपरिचित से चैटिंग करना, अश्लील रील्स बनाना, सोशल मीडिया में दिखावा इत्यादि का प्रचलन जोरों से चल रहा है।

वर्तमान युग में प्रेम में भावनात्मक पहलू की कमी आई है और प्रेम पर वासना की गहरी छाप दिखाई देती है। वर्तमान काल में बेटियों की परवरिश भी बेटों जैसी होती है। वह शिक्षित होकर बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त होती हैं। कितनी बार पत्नी पति से पद प्रतिष्ठा में आगे हो जाती हैं और दोहरी जिम्मेदारी निभाती हैं। यदि इसमें पति की उदासीनता और पुरुष दंभ का सम्मिश्रण हो जाता है तो विवाहेतर संबंध और विवाह विच्छेद जैसी समस्याएँ उस वैवाहिक जीवन में ग्रहण लगा देती है।

इस विषय पर साध्वी ऋतंभरा जिसे दीदी माँ भी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि आज पत्नी भी कमा रही हैं और आर्थिक रूप से सुदृढ़ और स्वतंत्र है। पति जैसा या पति से ज्यादा कमा रही हैं। अब वह भी काम से घर लौट रही हैं, उनमें भी अहंकार ने जन्म ले लिया है अब धैर्य की कमी उनमें भी दिखाई देती है। अब उस घर में दो पति हैं और अपनी पत्नी ढूँढ रहे हैं जो शायद कभी नहीं मिलेगी।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव हमारे परिवेश और जीवन के हर कोने में समाता जा रहा है। नैतिकता का पतन भी हुआ है। विवाह संस्कार भी इससे अछूता नहीं है।

यह समस्या तो गंभीर है लेकिन इसका समाधान भी हमें हीं निकालना पड़ेगा। जितनी भी समस्याएँ हैं उसका समाधान भी क्रमशः इस प्रकार है ः-

दांपत्य जीवन को सुखमय बनाने के लिए एक-दूसरे से अपनी समस्या और खुशी को खुलकर ईमानदारी पूर्वक साझा करना चाहिए क्योंकि पति-पत्नी रिश्ते के मध्य पारदर्शिता बहुत जरूरी है।

यदि यौन संबंधित समस्या है या अंतरंगता के प्रति उदासीनता है तो उसे चिकित्सीय या मनोचिकित्सक परामर्श से समाधान संभव है।

गृहस्थ जीवन में जब वित्तीय समस्या होती है तो उसका हल मिलकर बातचीत द्वारा निकालना चाहिए।

दो परिवेश के नये युगल दंपति को सामंजस्य बिठाने के लिए अनुभवी दंपति से संपर्क करना चाहिए। इसमें दोनों तरफ के माता-पिता या कोई भी अनुभवी व्यक्ति हो सकते हैं।

धैर्य और नैतिकता का पाठ भी पढ़ाया जाना चाहिए।पाश्चात्य संस्कृति के साथ अपनी संस्कृति से प्रेम करना भी सीखना चाहिए। कभी भी आग में घी बनने का काम नहीं करना चाहिए। दोनों पक्षों को बहुत ही धैर्य पूर्वक समझने की आवश्यकता है।

एक -दूसरे पर विश्वास और सम्मान की भावना भी किसी भी दंपति के प्रेम में वृद्धि करता है।

सोशल मीडिया का प्रभाव आज पूरे समाज में है यदि इसका उपयोग सकारात्मकता के लिए किया जाए तो फुहरता नहीं कलात्मकता बढ़ेगी।

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। वर्तमान समय में एक ऐसी संस्था की आवश्यकता समाज में है जो भावी जोड़े का मार्गदर्शन करें। उसमें होने वाले भावी पति-पत्नी को एक सच्चा जीवन साथी बनने को प्रेरित किया जाए। विवाह संस्कार और गृहस्थ आश्रम की गूढ़ बातों से अवगत कराते हुए उन्हें जिम्मेदारी और धैर्य पूर्वक कर्तव्य को निभाने के लिए एक-दूसरे के प्रति आदर और प्रेम की भावना जागृत करनी होगी। गृह कार्य हो या वित्तीय संबंधी या स्वास्थ्य संबंधी कोई भी निर्णय हो, दोनों को अपने दंभ से इतर एक-दूसरे को सहयोग करते हुए सामंजस्य का परिधान पहनने को वचनबद्ध करना हीं होगा। यदि विवाहेतर संबंध, आत्महत्या-हत्या और विवाह विच्छेद जैसी समस्या को रोकना है तो इस संस्था को बनाने में हम सभी को पूर्ण योगदान देना हीं पड़ेगा। यह स्वैच्छिक नहीं आवश्यक है। अपने पीढ़ियों के सुनहरे भविष्य लिए ठोस कदम उठाना हीं पड़ेगा।

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होते हुए भी अपने संस्कारों को नहीं भूलना इस दिशा में प्रथम कदम बढ़ाने जैसा है।

विवाह संस्कार से रीति-नीति, मंत्रोच्चारण, फेरे, रस्म विधि सब नाम के लिए हो गये हैं। आज फोटोग्राफी समाज में इतना अधिक सिर चढ़ गया है कि लोग प्री वेडिंग शूट, डेस्टिनेशन वेडिंग प्लानिंग के लिए लाखों-करोड़ों रुपए खर्च कर रहे हैं। उसे व्यक्तिगत रूप से स्वयं बंद करना पड़ेगा।

शौक भी कुछ हद तक करना सही है लेकिन वैवाहिक रीति नीति विधि को अपने दिखावे के लिए बलि चढ़ाना उचित नहीं है। विवाह रस्म विधिपूर्वक करना चाहिए। इन सभी बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए तो समस्या का समाधान अपने हाथों में होगा।

एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा मुजफ्फरपुर साहित्यिक महोत्सव का आयोजन

एम एस केशरी पब्लिकेशन द्वारा 12 अप्रैल को मुजफ्फरपुर साहित्यिक महोत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें देशभर के कविगण शामिल हुए। इस भव्य कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती संध्या देवी, डॉ राकेश रंजन, संतोष कुमार, पियूष कुमार, डॉ दिनेश प्रसाद सिन्हा जी साथ ही विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ प्रमोद कुमार यादव, डॉ वकील राय, अभिमन्यु कुमार, मिथलेश कुमार, पुलिस कुमार, डॉ अमन राज, राजेश पाल मीणा, राहुल श्रीवास्तव, राहुल कुमार, धीरज कुमार सिंह, सुनीता कुमारी जी मंच पर मौजूद रहेगे। मंच संचालन व सरस्वती वंदना मुस्कान केशरी व सुजाता शर्मा जी द्वारा किया गया। इस काव्यगोष्ठी के आमंत्रित स्वर सुमन लता, वंदना कुमारी, विवेक कुमार, सचिन शून्य, सुचिका श्रीवास्तव, चंदन कुमार, आस्था कुमारी, डॉ ऋचा शर्मा श्रेष्ठा, सुनीता मीना, सीताराम बुरट, रीति झा, सुजाता शर्मा, डॉ रामचन्द्र स्वामी, कल्याणी स्वरूपा, रंजना पाण्डेय मुक्ता, रमेश कुमार रसिय्यार, गुरुदीन वर्मा, श्वेता मौर्य, डॉ भवानी शारदे, डॉ शीतल शिवानी, अंजु कुमारी, डॉ प्रियंका झा, शिल्पा श्रीवास्तव, श्वेता कुमारी, डॉ मनीष कुमार शशि, अचानक ईश्वर, नंदलाल मणि त्रिपाठी, धर्मेंद्र सोलंकी, सदैव सौरभ, अभिषेक कुमार, शिल्पा श्रीवास्तव, स्वामी रामचन्द्र, दीपा श्रीवास्तव, सुनीता मीना, सुचिका श्रीवास्तव, काजल कुमारी, शिवानी कुमारी, विवेक, चंदन कुमार, आनन्द कुमार मित्तल, रियाज खान गौहर, चंद्रमोहन नीले, डॉ शारदा प्रसाद दुबे, डॉ योगिता सिंह हंसा, डॉ पंकज कुमार बर्मन, बलराम यादव देवरा, ज्योति राज मधुरिमा, भारत भूषण वर्मा असंध, ममता मदान जी है। सभी आमंत्रित स्वरों को सम्मान पत्र, मोमेटो, अंगवस्त्र व पत्रिका देकर सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम बिहार के सभ्यता, संस्कृति द्वारा आयोजित किया गया। एम एस केशरी पब्लिकेशन की संस्थापिका मुस्कान केशरी जी सभी साहित्यकार का तहे दिल से धन्यवाद करती है। मुजफ्फरपुर बिहार की साहित्यिक पब्लिकेशन ÷एम एस केशरी पब्लिकेशन÷ जिसकी संस्थापिका मुस्कान केशरी जी हैं। पब्लिकेशन द्वारा एकल पुस्तकें और साझा संकलन पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं और हर माह दो दिवसीय काव्यगोष्ठी, जुगलबंदी, साक्षात्कार और कविता व विडियो प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसमें देशभर के साहित्यकार सम्मिलित होते हैं और कार्यक्रम कों सफल बनाते हैं। इसी क्रम में मुजफ्फरपुर बिहार में मुजफ्फरपुर साहित्यिक महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देशभर के साहित्यकार सम्मिलित होगा।

शिक्षकों की टेट परीक्षा हेतु पुनर्विचार के लिए लगाएंगे याचिका

भोपाल। मध्य प्रदेश में शिक्षकों की टेट परीक्षा हेतु पुनर्विचार याचिका माननीय उच्चतम न्यायालय में प्रस्तुत करने की प्रगति की जानकारी हेतु आज दिनांक 13.04.26 को नवागत आयुक्त महोदय लोक शिक्षण द्वारा मध्यप्रदेश शिक्षक संघ के नेतृत्व में मान्यता प्राप्त संगठनों को संचालनालय में आमंत्रित किया गया। अभिषेक सिंह आयुक्त के साथ के के द्विवेदी (संचालक) श्रीमती कामना आचार्य (अपर संचालक) धर्मेंद्र शर्मा (संयुक्त संचालक) साथ अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे। मध्य प्रदेश शिक्षक संघ के प्रांताध्यक्ष डा. क्षत्रवीर सिंह राठौर, प्रांतीय संगठन मंत्री हिम्मत सिंह जैन, प्रांतीय महामंत्री राकेश गुप्ता, प्रांतीय कोषाध्यक्ष विनोद कुमार पूनी प्रांतीय संगठन मंत्री हिम्मत सिंह जैन उपस्थित रहे। चर्चा में आयुक्त महोदय ने पुनर्विचार याचिका के संदर्भ में स्पष्ट किया कि विभाग द्वारा सुप्रीम कोर्ट के सालिसिटर जनरल से विधिक परामर्श कर, रिव्यू पिटीशन का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। याचिका डिसाइड होते ही मध्य प्रदेश शिक्षक संघ द्वारा द्वारा दिए ज्ञापन के बिंदुओं के आधार पर माननीय सुप्रीम कोर्ट में शिक्षकों का पक्ष रखा जाएगा। उत्तर बनाते समय भी संघ के प्रतिनिधियों से चर्चा की जाएगी। आयुक्त अभिषेक सिंह ने स्पष्ट कहा कि एक सप्ताह में शिक्षकों का जिलेवार वर्गीकरण कर यह अवगत करा दिया जावेगा की कौन-कौन शिक्षक परीक्षा में सम्मिलित होंगे। टेट परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु कोई बाध्यता नहीं है। किसी कारणवश परीक्षा करनी ही पड़ी तो विभाग प्रत्येक जिलों में तैयारी हेतु कक्षाएं चलाएगा। शिक्षकों को मॉडल प्रश्न पत्र भी उपलब्ध कराए जाएंगे। नवागत आयुक्त महोदय ने आते ही शिक्षकीय समस्याओं को हल करने के संकेत दिए। शिक्षक साथियों में हर्ष की लहर। यह जानकारी मध्य प्रदेश शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष विक्रम शर्मा ने दी।

शाओमी ने रेडमी ए7 प्रो 5जी लॉन्च किया, सेगमेंट में सबसे बड़ा और सबसे स्लिम 6.9-इंच के डिस्प्ले के साथ

शाओमी इंडिया ने आज रेडमी ए7 प्रो 5जी के लॉन्च की घोषणा की। यह रेडमी ए सीरीज़ का पहला 'प्रो' मॉडल है। रोज़ाना इस्तेमाल करने वाले यूज़र्स की बदलती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया रेडमी ए7 प्रो 5जी, सेगमेंट के सबसे बेहतरीन हार्डवेयर और आसान सॉफ्टवेयर सुधारों को एक साथ लाता है। यह एक किफ़ायती कीमत पर भरोसेमंद और मज़ेदार स्मार्टफोन अनुभव देता है।

सेगमेंट का सबसे बड़ा और सबसे स्मूथ डिस्प्ले अनुभव

सेगमेंट के सबसे बड़े 17.53सीएम (6.9-इंच) डिस्प्ले और 120 हर्ट्ज़ के स्मूथ रिफ्रेश रेट के साथ, रेडमी ए7 प्रो 5जी रोज़ाना के कामों—जैसे ब्राउज़िंग, सोशल मीडिया और वीडियो स्ट्रीमिंग—के दौरान देखने का एक शानदार अनुभव देता है।

800 निट्स तक की पीक ब्राइटनेस के साथ, यह डिस्प्ले बाहर की तेज़ रोशनी में भी साफ़ दिखाई देता है। इसमें वेट टच टेक्नोलॉजी 2.0 भी शामिल है, जो उंगलियों के गीले या ऑयली होने पर भी सटीक और तुरंत रिस्पॉन्स देती है। इससे यह असल दुनिया में इस्तेमाल के दौरान ज़्यादा भरोसेमंद बन जाता है।

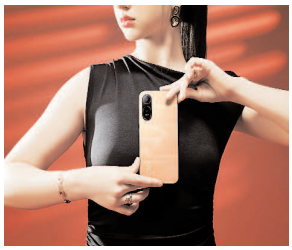

रेडमी ए7 प्रो 5जी सेगमेंट के सबसे बड़े और सबसे स्मूथ 'इमर्सिव डिस्प्ले' वाले स्मार्टफोन के तौर पर भी सबसे अलग है। साथ ही, यह सेगमेंट का एकमात्र ऐसा स्मार्टफोन है जिसे ट्रिपल टीयूवी राइनलैंड आई-कम्फर्ट सर्टिफिकेशन मिला है। इसमें डीसी डिमिंग भी है, जो लंबे समय तक स्क्रीन देखने पर आंखों पर पड़ने वाले दबाव को कम करती है।

ज़्यादा समय तक इस्तेमाल के लिए सेगमेंट की सबसे बड़ी 6300एमएएच की बैटरी

अपने शानदार डिस्प्ले के साथ-साथ, रेडमी ए7 प्रो 5जी में सेगमेंट की सबसे बड़ी 6300 एमएएच की बैटरी भी दी गई है। इसे मज़बूती के लिए इंजीनियर किया गया है और इसे बार-बार चार्ज किए बिना लंबे समय तक चलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। चाहे आप स्ट्रीमिंग कर रहे हों, लोगों से जुड़े रह रहे हों या चलते-फिरते ब्राउज़िंग कर रहे हों, यह आपकी रोज़ाना की ज़रूरतों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए बनाया गया है।

यह डिवाइस बॉक्स में दिए गए चार्जर के साथ 15 वॉट चार्जिंग को सपोर्ट करता है, और 7.5 वॉट वायर्ड रिवर्स चार्जिंग की सुविधा भी देता है। लंबे समय तक भरोसेमंद बने रहने के लिए बनाया गया यह फ़ोन, कई बार चार्ज होने के बाद भी बैटरी की परफॉर्मेंस को मज़बूत बनाए रखता है।

रेडमी ए7 प्रो 5जी, 6300एमएएच की बैटरी वाला सेगमेंट का सबसे पतला स्मार्टफोन भी है।

रोज़मर्रा के कामों के लिए शानदार परफ़ॉर्मेंस

रेडमी ए7 प्रो 5जी में एक दमदार ऑक्टा-कोर 5जी प्रोसेसर लगा है, जो रोज़मर्रा के कामों में तेज़ और रिस्पॉन्सिव परफ़ॉर्मेंस देता है। 8जीबी तक वर्चुअल रैम बढ़ाने की सुविधा के साथ, यह डिवाइस मल्टीटास्किंग क्षमताओं को और बेहतर बनाता है, जिससे ऐप्स के बीच स्विच करना ज़्यादा आसान हो जाता है और कुल मिलाकर फ़ोन का रिस्पॉन्स बेहतर होता है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा और रिलायंस जियो की साझेदारी - भारत में डिजिटल समावेशन को गति देने के लिए फीचर फोन हेतु 'bob World Lite' का शुभारंभ

मुंबई, बैंक ऑफ़ बड़ौदा एवं रिलायंस जियो ने आज 'bob World Lite' मोबाइल बैंकिंग ऐप के शुभारंभ हेतु साझेदारी की घोषणा की। यह जियोफोन प्राइमा 4जी डिवाइस पर फीचर फोन उपयोगकर्ताओं के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया पहला व्यापक मोबाइल बैंकिंग ऐप है। भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा समावेशन को प्रोत्साहित करने और फीचर फोन उपयोगकर्ताओं के लिए डिजिटल भुगतान को सुलभ बनाने के विज़न के अनुरूप, यह उद्योग में नवोन्मेषी पहल है, जो देशभर में लाखों उपयोगकर्ताओं को बाधारहित एवं व्यापक डिजिटल बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराएगी। यह ऐप बैंक ऑफ़ बड़ौदा के मौजूदा ग्राहकों के साथ-साथ किसी भी अन्य बैंक के ग्राहकों के लिए भी सरल और सुविधाजनक स्व-पंजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से उपलब्ध होगी।

पारंपरिक मोबाइल बैंकिंग ऐप जो केवल स्मार्टफोन पर कार्य करते हैं, की तुलना में 'bob World Lite' ऐप को किफायती फीचर फोन पर दैनिक बैंकिंग सेवाओं की व्यापक श्रेणी प्रदान करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है जिसके तहत इसका विस्तार अर्ध-शहरी और ग्रामीण भारत तक हो सके। इसमें लाइटवेट एवं कीपैड नेविगेशन के साथ कम बैंडविड्थ आधारित संरचना तथा सुरक्षित एक्सेस की सुविधा उपलब्ध है जो डिजिटल बैंकिंग को सरल, सहज और सुलभ बनाती है।

'bob World Lite' मोबाइल बैंकिंग ऐप वर्तमान में यूपीआई आधारित स्कैन एंड पे, निधि अंतरण, बिल भुगतान एवं रिचार्ज तथा प्रोफ़ाइल प्रबंधन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराती है, इसमें और भी सुविधाएं शीघ्र ही शामिल की जाएंगी। इस साझेदारी के अंतर्गत यह ऐप जियोफोन प्राइमा 4जी डिवाइस में प्री-लोडेड रहेगा और सीधे होम स्क्रीन से एक्सेस किया जा सकेगा। मौजूदा जियोफोन प्राइमा 4जी उपयोगकर्ता जियो स्टोर से bob World Lite ऐप एक्सेस कर सकते हैं।

डॉ. देबदत्त चांद, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने इस साझेदारी पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, डिजिटल समावेशन को प्रोत्साहित करना बैंक ऑफ़ बड़ौदा की प्रमुख प्राथमिकता है। वर्तमान में 'bob World' मोबाइल बैंकिंग प्लेटफॉर्म रिटेल ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है तथा 'bob World बिज़नेस' मर्चेन्ट, एमएसएमई तथा कॉर्पोरेट ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

जियो के साथ 'bob World Lite' का शुभारंभ स्मार्टफोन ईकोसिस्टम से आगे डिजिटल बैंकिंग के विस्तार की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। भारत में फीचर फोन उपयोगकर्ताओं का व्यापक एवं निरंतर बढ़ता आधार है और यह पहल सरल, सुरक्षित एवं कभी भी बाधारहित डिजिटल बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हुए डिजिटल सामर्थ्य को बढ़ाने में सेतु का कार्य करेगी। यह पहल हमें व्यापक ग्राहक आधार को जोड़ने और उनके साथ जुड़ाव के नए अवसर भी प्रदान करती है, जिससे समावेशी एवं सतत विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता सुदृढ़ होती है।

गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप ने भारत की सिविल न्यूक्लियर यात्रा में दिया योगदान

मुंबई। भारत ने अपने सिविल न्यूक्लियर प्रोग्राम में एक बड़ा कदम आगे बढ़ाया है। कलपक्कम में स्थित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) ने फ्रक्रिटिकलिटीफ्र हासिल कर ली है, जिसका मतलब है कि यह अब सफलतापूर्वक काम करने के अगले चरण में पहुंच गया है। यह उपलब्धि भारत की तीन-चरण वाली परमाणु ऊर्जा योजना में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाती है, जिसका उद्देश्य लंबे समय तक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और ईंधन का बेहतर उपयोग करना है।

गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप के प्रिसिजन इंजीनियरिंग व्यवसाय ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि में योगदान देते हुए लार्ज रोटेटिंग प्लग , स्मॉल रोटेटिंग प्लग और सोडियम पंप शाफ्ट का निर्माण और आपूर्ति की है। ये घटक भारतीय नाभिकीय विद्युत निगम लिमिटेड (भाविनी) को प्रदान किए गए हैं, जो भारत सरकार का पूर्ण स्वामित्व वाला उपक्रम है। इस उपलब्धि के साथ भारत दुनिया का केवल दूसरा देश बन गया है जिसने इस प्रकार की वाणिज्यिक फास्ट ब्रीडर रिएक्टर क्षमता स्थापित की है, जो जितना ईंधन उपयोग करता है उससे अधिक ईंधन उत्पन्न करने में सक्षम है।

ये घटक बड़े पैमाने के निर्माण और उच्च-स्तरीय प्रिसिजन इंजीनियरिंग का अनूठा संयोजन हैं। लगभग 8 मीटर व्यास और करीब 120 टन संयुक्त वजन वाले रोटेटिंग प्लग 360 डिग्री तक घूमने के लिए डिजाइन किए गए हैं, ताकि वे रिएक्टर कोर में ईंधन डालने की प्रक्रिया के लिए बिल्कुल सटीक स्थिति में आ सकें। वहीं 10 मीटर लंबा सोडियम पंप शाफ्ट तरल सोडियम के वातावरण में 500 आरपीएम से अधिक गति पर काम करता है, जिसके लिए संतुलन, सामग्री की मजबूती और संचालन की विश्वसनीयता पर बेहद कड़ा नियंत्रण आवश्यक होता है। इन सभी कंपोनेंट को भारत में पहली बार बिना किसी पूर्व घरेलू संदर्भ के डिजाइन और निर्मित किया गया, जो इस प्रकार के अनूठे एप्लिकेशन के लिए फर्स्ट-टाइम-राइट उपलब्धि है।